28. पारिवारिक आय

परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। धन के अभाव में जीवन बहुत ही कष्टदायी, दयनीय एवं तनावग्रस्त हो जाता है। इसके अभाव में व्यक्ति अपनी आवश्यक आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर पाता है जिससे उसकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है। इसके विपरीत पर्याप्त धन से परिवार सुखी, समृद्ध एवं सम्पन्न होता है तथा जिस परिवार की आय अधिक होगी तो उसका रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा होगा। परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हर परिवार को कुछ-न-कुछ आर्थिक कार्य करना पड़ता है जिससे धनोपार्जन किया जा सके।

अत: आय एक निश्चित अवधि में अर्जित की गई वह धन राशि है जो आर्थिक प्रयत्नों के फलस्वरूप प्राप्त होती है तथा जिसमें अन्य सुविधाएं जैसे नि:शुल्क मकान, मुफ्त चिकित्सा, मुफ्त शिक्षा, यात्रा व्यय आदि सम्मिलित होते हैं।

परिभाषा-

निकेल एवं डांर्सी के अनुसार 'पारिवारिक आय मुद्रा, वस्तुओं, सेवाओं के संतोष का प्रवाह है जो परिवार के अधिकार में उसकी आवश्यकताओं के निर्वाह हेतु आता है।

वर्तमान समय में मुद्रा ही क्रय शक्ति एवं विनियम का माध्यम है। विनियम के द्वारा ही हम वस्तु या सेवा को प्राप्त कर सकते हैं और आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। आय में उन सभी लाभ एवं सेवाओं को शामिल किया गया है जो एक निश्चित समय में प्राप्त होती है। प्रत्येक परिवार की आय समान नहीं होती है।

पारिवारिक आय से तात्पर्य सिर्फ मुद्रा या नकद रूप से नहीं है, अपितु यह तो कुल आय का एक अंश है। यदि कोई वस्तु या सेवा जैसे-मकान, शिक्षा, चिकित्सा सेवा आदि मुफ्त में प्राप्त होती है तो वह भी पारिवारिक आय का हिस्सा होती है। अत: पारिवारिक आय एक निश्चित अवधि में अर्जित धन राशि, वस्तुएँ व सुविधाएँ हैं जिन्हें परिवार अपनी आवश्यकताओं व इच्छाओं की पूर्ति हेतु उपयोग में लेकर संतोष प्राप्त करता है।

व्यक्ति सुखी एवं सम्पन्न अधिकाधिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करके बनता है या अन्य शब्दों में जिस परिवार की आय अधिक होती है, उसका रहन-सहन का स्तर भी उत्तम होता है।

ग्रास एण्ड कैण्डल के अनुसार, 'पारिवारिक आय मुद्रा, वस्तुओं, सेवाओं तथा संतोष का वह प्रवाह है, जो परिवार की आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को पूर्ण करने एवं उत्तरदायित्वों के निर्वाह हेतु उसके अधिकार में आता है।'

मुद्रा ही क्रय शक्ति एवं विनिमय का माध्यम है। विनिमय के द्वारा ही हम वस्तु या सेवा को प्राप्त कर सकते हैं और तब ही परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। आय में उन सभी लाभ एवं सेवाओं को शामिल किया गया है जो एक निश्चित समय में प्राप्त होता है। अधिक आय अर्जित करने वाले धनाढ्य व कम आय अर्जित करने वाले निम्न आय वर्ग की श्रेणी में आते हैं।

पारिवारिक आय के प्रकार

परिवार की आय को तीन वर्गों में विभाजन किया जा सकता है-

चित्र 28.1 पारिवारिक आय का वर्गीकरण

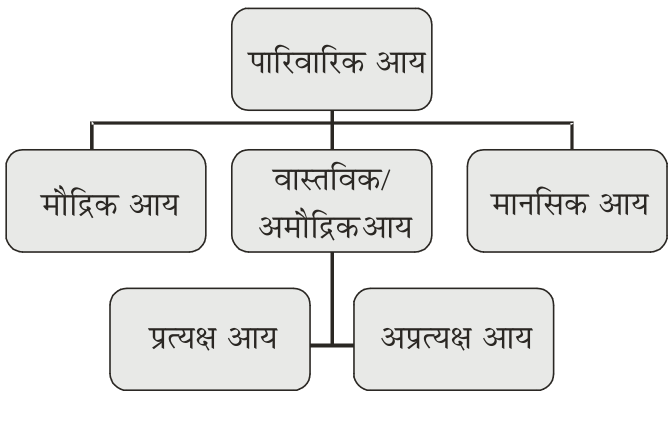

1. मौद्रिक आय: परिवार को निश्चित समय में मुद्रा अथवा धन के रूप में

प्राप्त होने वाली आय मौद्रिक आय कहलाती है। मौद्रिक आय विभिन्न प्रकार के आर्थिक प्रयासों से प्राप्त होती है अर्थात् वे कार्य जिनके द्वारा हम धनार्जन करते हैं या जिन कार्यों के बदले हमें आय प्राप्त होती है। मौद्रिक आय परिवार को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त हो सकती है। जैसे-पैतृक सम्पत्ति, किराया, वेतन, मजदूरी, उपहार, लॉटरी आदि। यह दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक हो सकती है। यह कार्य विशेष पर निर्भर करता है। मौद्रिक आय एक व्यय शक्ति है जिसके खर्च से व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। इससे हम दुनिया की अनेक वस्तु व सेवाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

ग्रॉस एवं क्रेन्डल के अनुसार, 'मौद्रिक आय से तात्पर्य उस क्रय शक्ति से है जो मुद्रा के रूप में किसी निश्चित समय में एक परिवार को प्राप्त होती है।

2. वास्तविक अमौद्रिक आय :- विशेष अवधि में प्राप्त होने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं को वास्तविक आय कहते हैं। इन वस्तुओं एवं सेवाओं को परिवार या तो अपने पारिवारिक व्यक्तियों, मित्रों आदि से प्राप्त करता है या फिर बिना मुद्रा खर्च किये सुविधा प्राप्त करता है। जैसे-मुफ्त चिकित्सा सुविधा, उपहार, मकान आदि।

ग्रॉस एवं क्रेण्डल के शब्दों में 'वास्तविक आय वस्तुओं एवं सेवाओं के उस प्रवाह को कहते हैं जो एक परिवार को निश्चित समय में उपयोग के लिए प्राप्त होता है।' वास्तविक आय दो प्रकार की होती है-

(i) प्रत्यक्ष आय : प्रत्यक्ष आय के अन्तर्गत वे वस्तुएं एवं सेवाएँ आती हैं जो एक परिवार बिना मुद्रा को व्यय किए प्राप्त करता है। जैसे-घर के बगीचे से फल, सब्जी, नौकरी के साथ मुफ्त मकान, चिकित्सा सुविधा, पैतृक सम्पत्ति, उपहार आदि। सार्वजनिक सेवाओं के उपयोग से लाभ भी प्रत्यक्ष आय है जैसे-पुस्तकालय, पार्क, पुलिस व्यवस्था आदि।

(ii) अप्रत्यक्ष आय : यह वह आय है जिसके अन्तर्गत वस्तु अथवा सेवाओं को मुद्रा के बदले प्राप्त किया जाता है। साधारणत: धन के बदले उपलब्ध वस्तु या सेवा अथवा वस्तु के बदले वस्तु देने पर प्राप्त की जाने वाली अप्रत्यक्ष आय होती है जैसे-किराया देने पर मकान उपलब्ध होना। ग्रॉस एवं क्रेण्डल के शब्दों में 'अप्रत्यक्ष आय के अन्तर्गत वे वस्तुएं या सेवाएँ आती हैं जो कि परिवार को किसी चीज के बदले में साधारणत: मुद्रा के बदले में ही प्राप्त होती है।

3. मानसिक आय : मुद्रा का व्यय करके मनुष्य किसी वस्तु को प्राप्त करता है। वस्तु का उपभोग करने पर उसे संतोष प्राप्त होता है यही संतुष्टि मानसिक आय कहलाती है। मानसिक आय का केवल अनुभव किया जा सकता है, इसे मापना असंभव है। निकल एवं डॉर्सी के अनुसार 'मानसिक आय वह संतुष्टि है जो हम दैनिक अनुभवों, धन के उपयोग या वास्तविक आय से प्राप्त होती है।'

पारिवारिक आय से अधिकतम संतोष विवेकपूर्ण व्यय से होता है, जब आय का उपयोग बहुत सोच-विचार कर परिवार की आवश्यकताओं की प्राथमिकता के अनुसार किया जाता है। मानसिक आय व्यक्तिगत होती है। यह एक आंतरिक भावना है जिसका संबंध मुख्यतया आत्मा के संतोष से होता है। परिवार में सभी सदस्यों की आवश्यकताएँ, रुचि, लक्ष्य अलग-अलग होते हैं तथा संतोष का स्तर भी भिन्न-भिन्न होता है, यही कारण है कि एक ही समय में समान वस्तुओं के उपभोग से प्राप्त होने वाला संतोष अलग-अलग व्यक्तियों के लिए अलग-अलग होता है।

पारिवारिक आय के विभिन्न स्रोत

1. मजदूरी : जीवनयापन हेतु शारीरिक श्रम करने के बदले व्यक्ति को

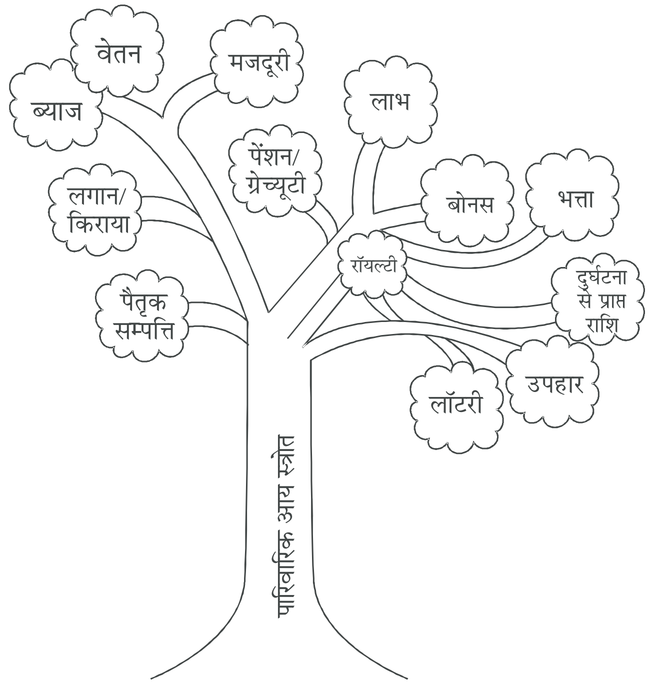

चित्र 28.2 : आय के स्रोत

प्राप्त होने वाली आय मजदूरी कहलाती है। मजदूरी ज्यादातर मुद्रा रूप में तथा कभी-कभी वस्तु या सेवा के रूप में भी दी जाती है। जैसे काम के बदले अनाज आदि। मजदूरी की दर श्रमानुसार व देश की आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। मजदूरी की अवधि प्रतिदिन, प्रति सप्ताह, अर्द्धमासिक एवं मासिक होती है।

2. वेतन : कई कार्यों को पूरा करने के लिए शारीरिक श्रम के साथ मानसिक श्रम भी करना पड़ता है। उसके प्रतिफल में प्राप्त होने वाली आय को वेतन कहते हैं। यह व्यक्ति की कुशलता, शिक्षा, कार्य की प्रवृत्ति, अनुभव, परिश्रम एवं पद के अनुसार मिलता है। मानसिक कुशलता का होना, अधिक वेतन पाने के लिए आवश्यक है। वेतन अधिकतर मासिक तौर पर दिया जाता है। वेतन वृद्धि वार्षिक होती है। वेतन में महंगाई भत्ता, मकान किराया, यात्रा भत्ता, वाहन सुविधाएँ आदि शामिल होते हैं।

3. ब्याज : व्यक्ति कई बार अपनी जमा पूँजी को किसी बैंक या पोस्ट ऑफिस या उद्योग में विनियोग करता है। इसके बदले में उसे मूलधन के अतिरिक्त जो कुछ प्रतिदिन के रूप में मिलता है उसे ब्याज कहते हैं। ब्याज के रूप में प्राप्त धन राशि सामान्यत: वेतन एवं

मजदूरी से कम होती है। ब्याज एक ऐसी आय है जो हमेशा बदलती रहती है और यह धन राशि वेतन से अधिक हो जाती है। ब्याज की दर ऋण की प्रकृति पर निर्भर करती है तथा समय-समय पर घटती व बढ़ती रहती है।

4. लगान या किराया : धनार्जन के कार्य के लिए भूमि की सेवाएँ प्रदान करने के फलस्वरूप जो आय प्राप्त होती है, उसे लगान कहा जाता है। यदि भूमि किसी दूसरे को उपयोग के लिए दी जाती है तो अपनी भूमि का उपयोग करने वाले से प्रतिफल के रूप में लगान वसूल किया जाता है। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति अपना मकान अन्य व्यक्ति को रहने के लिए देता है तो वह व्यक्ति रहने के बदले मकान मालिक को एक निश्चित राशि देता है, जो किराया कहलाता है। लगान व किराया आय के साधन होते हैं।

5. लाभ : कई व्यक्ति पूँजी का विनियोग कर उद्योग या व्यापार करते हैं, किसी वस्तु का उत्पादन कर उसे बेचते हैं। उत्पादन के साधनों की लागत का वितरण करने के बाद जो पैसा व्यापारी के पास बचता है वह लाभ कहलाता है। लाभ उद्योग की प्रवृत्ति, साहस व प्रबन्ध कुशलता पर निर्भर करता है। लाभ कम या ज्यादा हो सकता है।

6. पेंशन एवं ग्रेच्यूटी : एक निश्चित उम्र के पश्चात् व्यक्ति नौकरी से सेवानिवृत्त हो जाता है। सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाली निरन्तर मासिक आय को पेंशन कहते हैं। पेंशन की राशि सेवानिवृत्ति के समय मिलने वाले वेतन पर निर्भर करती है। वेतन का 50 प्रतिशत पेंशन के रूप में प्रतिमाह सेवानिवृत्त व्यक्ति को मिलता रहता है। इसी प्रकार सेवानिवृत्ति के समय कर्मचारी को एक निश्चित राशि संस्थान द्वारा जहाँ वह कार्य कर रहा था प्रदान की जाती है जिसे ग्रेच्यूटी कहते हैं। यह एकमुश्त राशि दी जाती है, पेंशन के समान नियमित रूप में लगातार नहीं दी जाती। वृद्धावस्था में पेंशन एवं ग्रेच्यूटी आय के उत्तम साधन हैं।

7. बोनस : कई व्यावसायिक संस्थाओं एवं उद्योगों में कार्यरत कर्मचारियों को वर्ष मेंएक बार वेतन के अतिरिक्त कुछ अंश कम्पनी अपने लाभ में से देती है जिसे बोनस कहा जाता है। यह व्यक्ति की अतिरिक्त आय होती है जो संस्था के लाभ पर निर्भर करती है। यह विशेषकर त्यौहारों पर दी जाती है जैसे-दीपावली पर कर्मचारियों को एक मास का अतिरिक्त वेतन दिया जाता है।

8. भत्ता : वेतन के अलावा कर्मचारियों को कई प्रकार के भत्ते दिये जाते हैं, जैसे-महंगाई भत्ता, यात्रा भत्ता आदि।

9. बीमारी और दुर्घटना में प्राप्त राशि : कई संस्थान अपने कर्मचारियों को बीमार होने या दुर्घटना होने या दुर्घटना हो जाने पर सुरक्षा और आर्थिक सहायता के रूप में औषधियों का व्यय या चिकित्सा खर्च वहन करने के लिए आर्थिक सहायता देते हैं। ऐसे लाभों को मेडिकल या उपचार सहायता कहा जाता है।

10. रॉयल्टी : लेखक को पुस्तक की बिक्री के अनुपात में प्रकाशक द्वारा दी गई धन राशि रॉयल्टी कहलाती है। यह बिक्री से प्राप्त राशि के निश्चित प्रतिशत के रूप में पहले से ही लेखक एवं प्रकाशक के बीच समझौते के अनुसार दी जाती है।

11. उपहार : जन्म दिवस, त्यौहार आदि पर मित्रों एवं रिश्तेदारों द्वारा दी गई धनराशि एवं वस्तुएँ जो व्यक्ति को उपहार स्वरूप दी जाती है, उसे उपहार कहते हैं। इससे परिवार की आय में वृद्धि होती है परन्तु यह नियमित आय नहीं होती है। उपहार की राशि निजी सम्बन्धों, अवसरानुकूल तथा आर्थिक क्षमता के अनुसार भिन्न हो सकती है।

12. लॉटरी : इससे प्राप्त धनराशि एवं वस्तुएँ भी पारिवारिक आय का साधन है। लॉटरी टिकिट बेचने में हजारों लोगों को कमीशन रूप में आय होती है व पुरस्कार रूप में टिकट खरीदने वालों को आय प्राप्त होती है।

13. पैतृक सम्पत्ति : किसी व्यक्ति के मृत्यु के पश्चात् जब उसके उत्तराधिकारियों को उसकी सम्पत्ति प्राप्त होती है तो यह भी उसकी आय का स्रोत है।

पारिवारिक आय वृद्धि के साधन :

मानव की आवश्यकताएँ असीमित हैं जिन्हें वह अपनी सीमित आय द्वारा पूरा नहीं कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु आर्थिक प्रयास करता है। व्यक्ति अपने अतिरिक्त समय में अपने परिवार के सदस्यों के सहयोग से अपने परिवार की आय में वृद्धि कर सकता है। आजकल महिलाएँ घरेलू कार्यों तक ही सीमित न रहकर हर क्षेत्र में पुरुष के कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्थिक सहयोग कर रही है, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति काफी सुदृढ़ बनाने व रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठाने में भागीदार बन रही है।

परिवार के जीवन को स्तर को हम ऊँचा उठा सकते हैं-

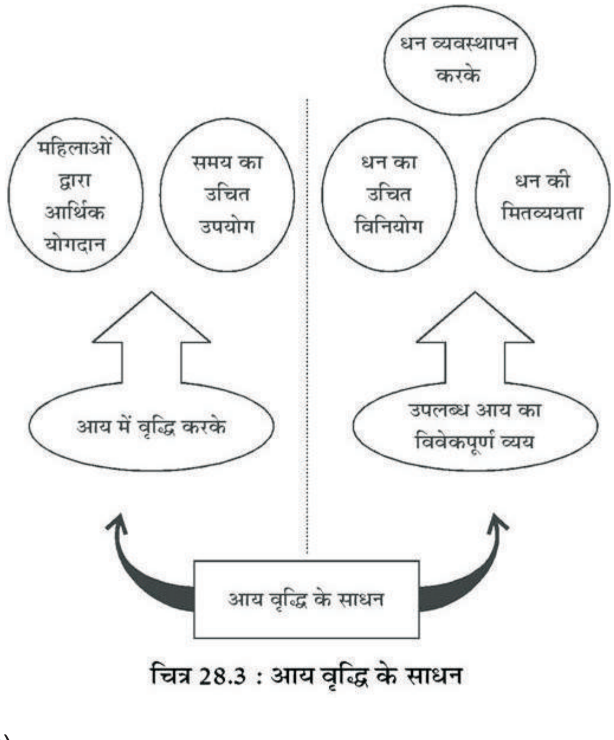

चित्र 28.3 : आय वृद्धि के साधन

1. परिवार की आय में वृद्धि करके।

2. उपलब्ध आय को विवेकपूर्ण व्यय करके।

1. परिवार की आय में वृद्धि करके-

(i) **महिलाओं द्वारा आर्थिक योगदान करना :** आज महिला की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। वे घरेलू जिम्मेदारियाँ निभाने के साथ-साथ धनोपार्जन हेतु घर के बाहर या घर के अन्दर ही विभिन्न कार्यों द्वारा परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने में सहायक है। गृहिणी को धनोपार्जन करने में गृह उद्योग विभाग सहायता, प्रशिक्षण, ऋण सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। दूध से बनी वस्तुएँ उत्पादित करना, मुर्गीपालन, रेशम के कीड़े का पालन आदि प्रमुख है। फल व सब्जियों का संरक्षण, साबुन बनाना, बड़ी, मंगौड़ी, ट्यूशन, सिलाई आदि कर बड़ी कुशलता से आय अर्जित कर सकती है।

(ii) **समय का उचित उपयोग :** घर व बाहर के कार्यों में सामंजस्य स्थापित करना आवश्यक है। पारिवारिक आय की कमी को समय पर कार्य सम्पादित कर रिक्त समय का सदुपयोग किया जा सकता है। दैनिक घरेलू कार्यों को यथा समय सम्पन्न करके जो अतिरिक्त समय बचता है उसका उपयोग धनोपार्जन के लिए किया जा सकता है। समय को अनावश्यक व्यर्थ न करें। समय का उचित उपयोग करने के लिए उचित प्रबंध प्रक्रिया अपनानी चाहिए।

(2) उपलब्ध आय का विवेकपूर्ण व्यय :

(i) **धन की मितव्ययता :** प्रत्येक वस्तु खरीदने हेतु धन की आवश्यकता होती है लेकिन धन का उपयोग योजनाबद्ध तरीके से किया जाए तो पारिवारिक आय में वृद्धि हो सकती है। आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए जितना महत्त्व आय में वृद्धि का है उससे भी कहीं अधिक महत्त्व आय को मितव्ययतापूर्वक व्यय करने का है।

(ii) **धनव्यवस्थापन करके :** धन एक सीमित साधन है, जिस पर परिवार की सम्पूर्ण व्यवस्था का संचालन आश्रित है। सीमित आय में अधिकाधिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने से मितव्ययता रहती है। बिना सोचे-विचारे व्यय करने की अपेक्षा योजनानुसार व्यय करने से अधिक समृद्धि एवं संतुष्टि मिलती है।

(iii) **धन का उचित विनियोग :** प्रत्येक व्यक्ति को अपने भविष्य की सुरक्षा हेतु अपनी आय में से कुछ हिस्सा बचा कर रखना चाहिए तथा इसे इस तरह निवेश करना चाहिए ताकि मूलधन की सुरक्षा के साथ-साथ कुछ धनराशि ब्याज अथवा लाभांश के रूप में प्राप्त होती रहे। भविष्य के लिए की गई बचत को उचित ढंग से बैंक, पोस्ट ऑफिस आदि में रखकर लाभ उठाना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. मनुष्य को अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की जरूरत होती है।
2. धन को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति कोई-न-कोई आर्थिक कार्य करता है, उसके काम के बदले में उसे जो मुद्रा प्राप्त होती है वह आय कहलाती है।
3. पारिवारिक आय तीन प्रकार की होती है- मौद्रिक , वास्तविक तथा मानसिक।
4. पारिवारिक आय को कई साधनों से प्राप्त किया जा सकता है। जैसे- वेतन, कृषि, मजदूरी, लाभांश, पेंशन इत्यादि।
5. परिवार आय परिवार के सदस्यों की शिक्षा, पद, परिवार में सदस्यों की संख्या, योग्यता इत्यादि पर निर्भर करती है।
6. वर्तमान युग के असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पारिवारिक आय में वृद्धि की आवश्यकता होती है जो कि धन की मितव्ययतापूर्ण खर्च करके एवं महिलाओं द्वारा लघु उद्योग स्थापित करके की जा सकती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न में से सही उत्तर चुनें :

(i) पारिवारिक आय के .... प्रकार हैं।

(अ) दो (ब) एक

(स) तीन (द) पाँच

(ii) पारिवारिक आय के स्रोत हैं-

(अ) लगान (ब) ग्रेच्यूटी

(स) मजदूरी (द) सभी

(iii) वस्तुओं एवं सेवाओं का प्रवाह जो कि एक परिवार को निश्चित समय में उपयोग के लिए प्राप्त होते हैं-

(अ) वास्तविक आय (ब) मौद्रिक आय

(स) पारिवारिक आय (द) दैनिक आय

(iv) मानसिक आय का सम्बन्ध मुख्य रूप से होता है-

(अ) सेवाओं से (ब) आत्मा के संतोष से

(स) मुद्रा से (द) वस्तुओं से

(v) आय वृद्धि के साधन हैं-

(अ) धन का उचित उपयोग (ब) समय का सही उपयोग

(स) घरेलू उद्योग धन्धे (द) उपरोक्त सभी

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये-

(i) विशेष अवधि में प्राप्त होने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं का .... आय कहते हैं।

(ii) पुस्तक की बिक्री के अनुपात में प्रकाशक द्वारा दी गई धनराशि .... कहलाती है।

(iii) मानव की .... आवश्यकताएँ हैं जिन्हें वह अपनी .... आय द्वारा पूरा करता है।

(iv) .... ही क्रय शक्ति एवं विनिमय का माध्यम है।

(v) .... आय के अन्तर्गत वस्तु अथवा सेवाओं को मुद्रा के बदले प्राप्त किया जाता है।

3. पारिवारिक आय के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिये?

संक्षेप में टिप्पणी लिखिये।

4. पारिवारिक आय के मुख्य चार स्रोतों के बारे में संक्षेप में लिखिये।

5. आय वृद्धि के साधनों को समझाइये।

उत्तरमाला :

1. (i) स (ii) द (iii) अ (iv) ब (v) द

2. (i) वास्तविक/मौद्रिक आय (ii) रायल्टी (iii) असीमित, सीमित (iv) मुद्रा (v) अप्रत्यक्ष